Before dhyan following guru-vandana (prayer) is recited.

प्रार्थना

ॐ श्री गुरू वन्दना ॐ

हे दीनबन्धु दयाल गुरू! केहि भाँति तव गुण गाऊँ मैं।
तुम्हरे पवित्र चरित्र केहि विधि, नाथ कहि के सुनाऊँ मैं।।
जिह्वा अपावन है मेरी, गुरू नाम कैसे लीजिए।
मन फँस रहा भव-जाल में, वह किस तरह प्रभु दीजिये।।
धन-धान्य माया रूप हैं, क्यों कर निछावर कीजिये।
संसार सागर में फँसा, गुरू-ध्यान कैसे कीजिये।।
तन कैसे अर्पण कर सकूँ, वह तो महा पापी अधम।
धन-धान्य औ मन देके गुरू, तुमसे नहीं उद्धार हम।।
श्रद्धा सुमिरनी भेंट करि, मैं दीन हो चरणों पड़ा।
मैं पतित हूँ तुम पतित पावन, आपका है आसरा।
भव-सिंधु में हूँ फँस रहा, गुरूदेव मुझे उठाईये।
गहि बाँह दीनानाथ, अपराधी को पार लगाइये।।
जो दीन हो चरणों पडे, हे नाथ! वे सारे तरे।।
तेरा भिखारी तुम बिना, प्रभु आसरा किसका करे।।
मैं दीन हूँ तुम दीनबन्धु, मैं अधम तुम नाथ हो।
मैं हूँ अनाथ कृपानिधान, तो तुम अनाथों के नाथ हो।।
माता-पिता-सुत-भ्रात-भार्या, कोई साथ न जायेंगे।
उस पाक कुम्भी नरक में, कोई न हाथ बटायेंगे ।।
यह सोच के तव शरण आया, अब ठिकाना है नहीं।
बस पार कर दो मेरी नौका, और अपना है नहीं।।

After completion of dhayn, following prayers are recited.

ॐ ईश-स्तुति ॐ

हे जग नायक! विश्व विनायक! हे जगजीवन के जन है।
हे दु:ख भंजन! जन मन रंजन! जय-जय आनन्द के घन हे।।
गुरू, पितु-माता, सब जग-त्राता, मनुज रूप नर नागर हे!
हे निर्गुण, हे निराकार प्रभु! निरभय, निगम निरन्जन हे।।
व्यक्त तुम्हीं अव्यक्त तुम्हीं हो, सत्-चित् आनन्द रूप विभो!
गुणागार, गोतीत, अगोचर, अनुभवगम्य, अजेय प्रभो।।
सब के स्वामी, अन्तरयामी, पारब्रह्म परमेश्वर हे!
करूणासागर, सब गुण आगर, सत्-चित् प्रेम निकेतन हे।।

परम गुरू! राम मिलावन हार।

अति उदार मंजुल मंगलमय, अभिमत फल दातार। परम गुरू०।
टूटी-फूटी नाव पड़ी मम, भीषण भव-नद धार। परम गुरू०।
जयति-जयति जयदेव दयानिधि! वेग उतारो पार। परम गुरू०।
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।।
ओ३म् सहनाववतु। सह नौ भुनक्तु। सहवीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।।
ओ३म् शान्ति: शान्ति: शान्ति: (ऋग्वेद)